'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 47 : Indian Literature & Society
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
February 2018

हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी चेतना

प्रा. श्रीमती. योगिता विष्णुपंत उशिर
(हिंदी विभाग)
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, मनमाड,
ता. नांदगाव जि. नाशिक

प्रस्तावना :-

हिन्दी साहित्य में आँचलिक उपन्यासों की एक विशिष्ट परंपरा चली आयी है । इन उपन्यासों में किसी जनपद या प्रदेश के ग्रामीण अँचल विशेष के लोकजीवन के तत्वों का विशद चित्रण होता है। उपन्यासकार उस अँचल के रीति-रिवाजों, परम्पराओं, धार्मिक एवं नैतिक आचार, विचारों, साथ ही लोकसंस्कृति का संपूर्ण चित्रण प्रस्तुत करता है ।

आँचलिक उपन्यास अँचल के समग्र जीवन का उपन्यास है । आँचलिक उपन्यास लिखना मानो हृदय में किसी भू-भाग की कसमसाती हुई जीवनानुभूति को वाणी देने का अनिवार्य प्रयास है । देश के किसी भी अँचल के भौगोलिक अंश, जनपदीय क्षेत्रों तथा वहाँ की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन का चित्रण होता है, और लोकजीवन के लोकतत्वों का सारग्राही सम्यक चित्रण होता है ।

हिन्दी साहित्य में आँचलिक उपन्यास के प्रवर्तक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु रहे है । उनके द्वारा लिखा गया पहला आँचलिक उपन्यास मैला आँचल (१९५४) को हिन्दी का शुद्ध आँचलिक उपन्यास माना जाता है । इसके बाद आँचलिक उपन्यासों की परंपरा चली आयी । अनेक उपन्यास लिखे गए, इन उपन्यासों में विविध विषयों का समावेश हुआ है । यहाँ अध्ययन हेतु आँचलिक उपन्यासों में नारी चेतना केंद्रीय स्थान पर है ।

ग्रामीण नारी में चेतना का उद्‌भव

'चेतना' शब्द अधिक व्यापक है, 'चेतना' शब्द 'चेतन' से या सूक्ष्म दृष्टि से देखे तो 'चेत' से बना है। चेतना के अनेक अर्थ है- जिनमें सोच समझ कर ध्यान देना, होश में आना, सावधान होना। चेतना एक मानसिक चित्तवृत्ति है । चेतना मनुष्य के मन में सुप्तावस्था में होती है । इस चेतना को जागृत करने का कार्य अनेक माध्यमों द्वारा होता है ।

आधुनिक युग में ग्रामीण नारी के मन में भी चेतना जागरुक हुई है, वह भी समानता की माँग करने लगी है। वह भी स्वतंत्र रहकर जीवन यापन करना चाहती है । आज उसका जीवन व्यापक बन गया है । उपन्यासकारों ने आँचलिक उपन्यासों में नारी चित्रण किया है, जिनमें नारी चेतना प्रस्तुत होती है। यहाँ पर कुछ आँचलिक उपन्यासों का अध्ययन किया जाएगा जो निम्नानुसार है-

'इदन्नमम्' की मंदा (मंदाकिनी)-

मैत्रेयी पुष्पा कृत 'इदन्नमम्' उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र मंदा है । मंदा नारी शोषण के खिलाफ आवाज उठाती है, संघर्ष करती है, और ग्रामीण नारियों को प्रेरित करने का काम करती है । वह ग्रामीण परिवेश की है, लेकिन पढी-लिखी लडकी है । बचपन में परिस्थिती वश उसे अपना घर छोडकर दूसरे गाँव जाना पडा था । कम उम्र में ही मंदा समझदार हो गई थी । पिता की मृत्यु के बाद माँ जीजा के साथ भाग जाती है, और मंदा को पाने के लिए कोर्ट में अर्जी देती है, लेकिन दादी मंदा को लेकर चली जाती है । घर